

डॉ. गैरी मीडर्स, 1 कुरिन्थियों, व्याख्यान 5, बाइबिल अध्ययन में सत्यापन की प्रक्रिया का अभ्यास करना

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी मीडर्स द्वारा 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह व्याख्यान 5 है, बाइबिल अध्ययन में सत्यापन की प्रक्रिया का अभ्यास करना।

1 कुरिन्थियों के इस परिचय में व्याख्यान संख्या 5 में आपका स्वागत है।

आज, हम उस पर विचार करने जा रहे हैं जिसे हम मान्यता कहते हैं। यह आज आपके पास मौजूद हैंडआउट से एक तकनीकी शब्द बन जाएगा। आपके पास इस विशेष व्याख्यान के लिए नोट पैक नंबर 4 होना चाहिए, जिसका शीर्षक है बाइबिल अध्ययन में मान्यता की प्रक्रिया का अभ्यास करना।

इस तरह के विशेष परिचयात्मक व्याख्यानों में से अंतिम है। अगला व्याख्यान जो हम करेंगे, वह वास्तव में 1 कुरिन्थियों का एक व्यापक परिचय होगा, लेकिन मैं आपके साथ इन तीन प्रमुख मुद्दों को साझा करना चाहता था क्योंकि हम अंग्रेजी बाइबिल की एक पुस्तक का अध्ययन करने के लिए तैयार हैं। चूंकि मैं आपको केवल इस विशेष सेटिंग और इस विशेष पाठ्यक्रम में रखता हूँ, न कि किसी स्कूल के पाठ्यक्रम में, इसलिए मैं आपके साथ इन वस्तुओं को साझा करने में रुचि रखता हूँ जो मुझे लगता है कि बाइबिल की व्याख्या करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, खासकर बाइबिल के एक छात्र के रूप में, विशेष रूप से अंग्रेजी बाइबिल के।

हमने इतने कम समय में इतनी सारी बाइबलों के बारे में बात की है ताकि आपको यह पता चल सके कि आप अनुवादों के प्रसार का अपने लाभ के लिए कैसे उपयोग कर सकते हैं। आप बाइबल अनुवादों के बारे में भी जागरूक हो सकते हैं ताकि आप अपने लोगों की मदद कर सकें जब वे इन संस्करणों के विभिन्न संस्करणों के साथ आपके पास आते हैं। हमने इस बारे में भी बात की है कि बाइबल कैसे सिखाती है।

बाइबल प्रत्यक्ष, निहित और रचनात्मक तरीके से शिक्षा देती है। दरअसल, यह वह तरीका है जिससे हम बाइबल से शिक्षा प्राप्त करते हैं। और यह समझना एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतिमान है।

बाइबल की हर आयत जिसका आप अध्ययन करते हैं, पिरामिड के उन टुकड़ों में से एक पर आती है। आप या तो सीधे अर्थ प्राप्त कर रहे हैं, या शायद यह किसी चीज़ पर निहित तरीके से लागू हो रहा है, या कोई व्यक्ति रचनात्मक निर्माण के भीतर इसका दावा कर रहा है। आप हर पाठ को किसी न किसी तरह से इन तीन श्रेणियों के अंतर्गत देख सकते हैं।

और जब आप किसी चीज़ के प्रमाण के रूप में बाइबल का उपयोग कर रहे हों, तो आपको हमेशा पता होना चाहिए कि आप उस प्रतिमान के भीतर कहाँ हैं। आज इन तीन विशेष मर्दानों में से

अंतिम है, और यह वह मुद्दा है जिसे मैं सत्यापन कहता हूँ। यहाँ वास्तव में कुछ भी बहुत तकनीकी नहीं है।

यह केवल उस शब्द सत्यापन का उपयोग करके आपको यह कल्पना करने में मदद करता है कि बाइबल के अध्ययन में क्या होता है। कृपया ध्यान दें, यदि आप चाहें, तो अपने नोटपैड नंबर चार में, सबसे ऊपर, पहला पैराग्राफ। मैंने इसे पूरी तरह से स्पष्ट कर दिया है, और मैं यहाँ आपको कुछ पढ़कर सुनाऊँगा ताकि आप इसे सुन सकें और इस पर विचार कर सकें।

कभी-कभी, पढ़ते समय, मैं कुछ पहलुओं पर ज़ोर दे सकता हूँ, जिससे आपके लिए वह बिंदु समझना आसान हो जाता है जिसकी मैं तलाश कर रहा हूँ। ठीक है, वैधता शब्द केवल उस प्रक्रिया को दर्शाता है जिसके द्वारा हम बाइबिल के पाठ की प्रतिस्पर्धी व्याख्याओं को मान्य करते हैं। हम पहले ही इस तथ्य के बारे में बहुत बात कर चुके हैं कि हमारे पास एक बाइबिल है, और फिर भी हमारे पास उस बाइबिल के बहुत सारे प्रतिनिधित्व हैं, यहाँ तक कि चर्च ग्लोबल के रूढ़िवादी धर्मशास्त्र की छत्रछाया में भी।

एक बाइबल, अनेक व्याख्याएँ। खैर, हम इस बारे में बात करने की कोशिश कर रहे हैं कि यह कैसे हो सकता है। और यहाँ इसका एक और पहलू है। जब आप सत्यापन करते हैं, तो आप इस विविधता को सामने लाते हैं।

किसी भी दिए गए पाठ पर विचारों को मान्य करने का मतलब है उन्हें उस साहित्य से अलग करना जो उस दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है। और अब यह बेहद महत्वपूर्ण है। मैं इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ।

साहित्य जो इस दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है। कभी-कभी नौसिखिए छात्र, जो अध्ययन की प्रक्रिया शुरू कर रहे हैं, उन्हें एक किताब मिल जाएगी, और वह एक किताब आपको आसानी से बता देगी कि फिर से जन्म लेने का क्या मतलब है या किसी महिला को न छूने का क्या मतलब है, या मृतकों में से जी उठने का क्या मतलब है। खैर, वह एक किताब उन सभी पाँच दृष्टिकोणों को नहीं रखती है।

वह किताब कम से कम चार अन्य लोगों के विचारों का प्रतिनिधित्व करती है। अब, अगर वह किताब अच्छी है और वह ऐसा करती है, तो उसमें बहुत सारे फुटनोट होंगे। फुटनोट नहीं, तो कोई फ़ायदा नहीं।

यह आम तौर पर उन किताबों के लिए एक कहावत है जो आप खरीदते हैं। कोई फुटनोट नहीं, तो कोई फ़ायदा नहीं। इसलिए, अगर आपके पास यह एक किताब है, और इसमें इन विचारों की प्रस्तुति को मान्य करने के लिए फुटनोट दिए गए हैं, तो आपको तुरंत एहसास होता है कि आप लोगों से कुछ नहीं सुन रहे हैं।

आप इस एक लेखक से सुन रहे हैं जो इन लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहा है। आप द्वितीयक स्रोतों के रूप में जाने जाने वाले स्रोतों में हाथ आजमा रहे हैं। आप कुछ ऐसा इस्तेमाल कर रहे हैं जो किसी और चीज़ की रिपोर्ट कर रहा है।

यह एक द्वितीयक स्रोत है। अब, ऐसे समय हो सकते हैं जब यह सुविधाजनक हो सकता है और उपयोगी हो सकता है। और अगर आपके पास कोई विशेष रूप से अच्छा लेखक है जो ऐसा कर रहा है, तो इसमें विश्वसनीयता शामिल है।

हालाँकि, सत्यापन की बड़ी प्रक्रिया में यह स्वीकार्य नहीं है। आप जो करते हैं वह यह है कि आप उन फुटनोट्स को देखते हैं, और आप उस सामग्री को पुनः प्राप्त करते हैं ताकि आप इसे सीधे घोड़े के मुँह से प्राप्त कर सकें। इसलिए, सत्यापन का यह मुद्दा हमेशा उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो वास्तव में एक दृष्टिकोण रखता है।

इस दृष्टिकोण में उनका निहित स्वार्थ है, यह संभावना से भी अधिक है। वे अपना सबसे मजबूत पक्ष प्रस्तुत करने जा रहे हैं। आप नहीं चाहेंगे कि उनका पक्ष किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत किया जाए जो उनके पक्ष का खंडन करना चाहता हो।

ऐसा जरूरी नहीं है कि कोई दूसरा लेखक बेईमान हो, लेकिन वे इसे उसी तरह से नहीं करेंगे जैसा कि मूल लेखक करता है। और अच्छे शोध में, आपको हमेशा प्राथमिक स्रोत पर जाना चाहिए, न कि द्वितीयक स्रोत पर। इसलिए, विचारों को मान्य करना केवल साहित्य को सामने लाना है।

विचारों को सामने लाना। वे जो कहते हैं उसे व्यवस्थित करना। प्रत्येक के दावों की तुलना दूसरे से करना।

क्योंकि, देखिए, वे एक ही श्लोक का उपयोग कर रहे हैं। एक व्यक्ति श्लोक के बारे में यह कैसे कह सकता है, और दूसरा व्यक्ति श्लोक के बारे में वह कैसे कह सकता है? आप यह जानना चाहते हैं कि वे क्या कह रहे हैं और यह देखने की कोशिश करें कि वे उस अंश पर एक अलग दृष्टिकोण कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। और फिर आप इन विचारों को एक अच्छी किराने की सूची में व्यवस्थित और वर्गीकृत करते हैं।

और विचारों की उस सूची के साथ, आपके पास उस विशेष दृष्टिकोण को रखने के लिए उनके प्राथमिक कारण हैं। अब जब आपको किसी चीज़ पर पाँच विचार मिलते हैं, उदाहरण के लिए, कारणों के साथ थोड़ा सा ओवरलैप हो सकता है। लेकिन आप इसे साहित्य आधार से बाहर देखना चाहते हैं।

क्योंकि यह जानकारी का वह भंडार बन जाता है जिस पर आप बाइबल के पाठ के बारे में तर्कसंगत निर्णय लेने के लिए चिंतन करने जा रहे हैं। मोटे अक्षरों में लिखे अक्षरों पर ध्यान दें। सत्यापन केवल शोध की प्रक्रिया है जो व्याख्याकारों को बाइबल के अंशों के अर्थ के बारे में तर्कसंगत निर्णय लेने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करती है।

बस इतना ही है। अब, यह बहुत काम हो सकता है। और अगर आप किसी ऐसी जगह पर हैं जो किसी अच्छी लाइब्रेरी से अलग-थलग है, अगर आप दुनिया के किसी ऐसे हिस्से में हैं जहाँ आप

अच्छी लाइब्रेरी तक पहुँचने के लिए कुछ मील भी ड्राइव नहीं कर सकते हैं, तो मैं समझता हूँ कि ऐसा कुछ कितना समस्याग्रस्त हो सकता है।

इससे यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि जब आप 1 कुरिन्थियों की पुस्तक जैसी किसी चीज़ का अध्ययन करते हैं, तो आपके पास दो से चार या पाँच अच्छी टिप्पणियाँ होनी चाहिए जो इस तरह का काम करती हैं ताकि आपके पास पाठ के बारे में निर्णय लेने के लिए एक अच्छा साहित्य आधार हो। एक तरह से, मेरे दोस्तों, यही वह है जो परमेश्वर ने आपको करने के लिए बुलाया है। अब, मैं कुछ उल्लेख करने जा रहा हूँ, लेकिन मैं इसे यहाँ नहीं बता पाऊँगा।

कई बार लोग इस प्रक्रिया को अनदेखा कर देते हैं। कभी-कभी, आप मेरी बात सुनते हुए एक व्यक्ति हो सकते हैं और कह सकते हैं, मुझे यह पसंद नहीं है कि कोई मुझे बताए कि मुझे बाइबल का क्या मतलब है, इस बारे में तर्क करना है। मुझे बस प्रार्थना करने और पवित्र आत्मा से यह पूछने की ज़रूरत है कि मुझे बाइबल का क्या मतलब है।

खैर, मेरे पास आपके लिए बुरी खबर है। यह पवित्र आत्मा की भूमिका के बारे में गलतफहमी है। पवित्र आत्मा की भूमिका आपको यह बताना नहीं है कि बाइबल का क्या मतलब है।

पवित्र आत्मा की भूमिका आपको यह विश्वास दिलाना है कि बाइबल का अर्थ महत्वपूर्ण है और आपको प्रेरित करना है कि आप वहाँ जाएँ और उस तरह का काम करें जो उस अर्थ को सामने लाने के लिए ज़रूरी है। ऐसा करने से परमेश्वर की महिमा होती है। उसने आपको इस तरह के काम करने, सोचने, महसूस करने, चुनने और करने के लिए बनाया है, जो दर्शाता है कि आप उसकी छवि में बनाए गए हैं।

और अगर आप निष्पक्ष और ईमानदार होने में सक्षम हैं, तो आप देख सकते हैं कि यह वास्तव में हमारे ईसाई अनुभव की प्रकृति है। हमारे पास विविधता है। हमारे पास इस बात पर बहस है कि अंशों का क्या अर्थ है।

और सिर्फ़ यह कहकर चर्चा को बंद करने के लिए तुरूप का पत्ता इस्तेमाल करना कि पवित्र आत्मा ने मुझे ऐसा-ऐसा बताया, एक बहाना है। पवित्र आत्मा हमें यह विश्वास दिलाता है कि शास्त्र महत्वपूर्ण हैं और हमें उसका अनुसरण करने के लिए प्रेरित करता है। आत्मा की गवाही वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा ऐसा होता है।

अब, हम 1 कुरिन्थियों 2 में इसके बारे में थोड़ा और बात करेंगे। लेकिन यह दावा करना कि आत्मा आपको बाइबल का अर्थ बताती है, शास्त्रों का अनुसरण करने की जिम्मेदारी से पूरी तरह बचना है। अब, स्रोतों तक पहुँच रखने वाला कोई भी व्यक्ति, और यह एक बड़ा सवाल है, मुझे एहसास है। यह आप में से कई लोगों के लिए एक चुनौती हो सकती है।

मैं बस इतना कहना चाहता हूँ: किसी भी कॉलेज को कम मत समझिए जो ड्राइविंग दूरी के भीतर हो। आप यह देखकर हैरान हो सकते हैं कि उनके पास किस तरह की लाइब्रेरी है। कई विश्वविद्यालयों ने संप्रदायों द्वारा प्रायोजित शुरुआत की, और उन्होंने बहुत पहले ही उस संप्रदाय को छोड़ दिया, लेकिन उन्होंने लाइब्रेरी को नहीं छोड़ा।

आप बस वहाँ जाकर और देखकर उस लाइब्रेरी को बहुत जल्दी खोज सकते हैं। अब, इंटरनेट बेहद मददगार है, और यह हर समय बेहतर होता जा रहा है। लेकिन मुझे आपको चेतावनी देनी होगी कि इंटरनेट के साथ समस्या यह है कि आपको जो कुछ बता रहा है, उसे मान्य करना, कि क्या वे राय रखने के लिए सक्षम हैं।

यह अपने आप में एक चुनौती बन जाती है, जिसका सामना करना ही पड़ता है। मैं इससे निपटता हूँ। मैं कभी-कभी जानकारी पाने के लिए इंटरनेट पर जाता हूँ।

विकीपीडिया [यानी विकिपीडिया] का उपयोग करूँगा, और मैं जानबूझकर उस छोटे से शब्दजाल का उपयोग करता हूँ, विकीपीडिया। आपको बहुत सावधान रहना होगा क्योंकि यह लोगों के लिए जानकारी डालने का एक खुला मंच है। अब, शायद यह आपको किसी चीज़ पर बड़ी तस्वीर दे सकता है, लेकिन आप इसे एक विश्वसनीय स्रोत के रूप में नहीं ले सकते।

जब मैं स्नातक पाठ्यक्रम पढ़ाता हूँ, तो मैं छात्रों को किसी भी चीज़ के सत्यापन के लिए उस तरह के स्रोत का उपयोग करने की अनुमति नहीं देता। आपको वास्तविक प्रकाशित स्रोतों तक पहुँचना होगा। अब, आप बहुत सारे आधुनिक कम्प्यूटरीकृत स्रोतों, जैसे कि लोगो के माध्यम से ऐसा कर सकते हैं।

आप लोगोस या लोगोस कह सकते हैं। ओ या तो आह होगा या ओह। और उनसे आपको बहुत सारी बढ़िया सामग्री मिल सकती है।

मेरी सलाह यह है कि आप उनके बड़े पैकेज को न खरीदें, बल्कि शुरुआती पैकेज खरीदें और फिर जाकर उन खास चीज़ों को देखें जो उनके पास उपलब्ध हैं और जो आपको उनके द्वारा दिए जाने वाले पैकेज में तुरंत नहीं दिखती हैं। लेकिन जाकर कमेंट्री देखें। उनके पास ऐसी कई बेहतरीन चीज़ें हैं जिन्हें आप अपने लोगो प्रोग्राम में शामिल कर सकते हैं।

यदि आपके पास वे पुस्तकें हैं, तो आप उनमें से कई को भी प्राप्त कर सकते हैं, जिनका मैंने उल्लेख किया है। कभी-कभी, आप उन पुस्तकों को खरीद भी सकते हैं, और आपको पूरा प्रोग्राम खरीदने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि उनके पास पर्याप्त खोज इंजन है, जिससे आप उन्हें अपने कंप्यूटर पर वैसे भी उपयोग कर सकते हैं। आप इसे देख सकते हैं।

आप शायद कंप्यूटर के बारे में मुझसे ज़्यादा समझदार हैं। इसलिए, स्रोतों तक पहुँच बाइबल का उचित तरीके से अध्ययन करने में सक्षम होने का आधार है। जब आपके पास वे होते हैं, तो आपके पास वह करने का आधार होता है जिसे हम सत्यापन कहते हैं।

व्याख्यात्मक प्रक्रिया का अगला स्तर इन स्रोतों से प्राप्त अर्थ और पाठ के बारे में सूचित निर्णय लेना है। इस पहलू के लिए व्याख्या के कई पहलुओं की समझ की आवश्यकता होती है जिन्हें हेर्मेनेयुटिक्स के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। अब, आपको इसमें विशेषज्ञ होने की आवश्यकता नहीं है।

अगर आप पढ़ सकते हैं, और अगर आपके पास चीजों को खोजने की ऊर्जा और प्रेरणा है, तो आपने प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस गूढ़ वाक्यांश पर ध्यान दें, हेर्मेनेयुटिक्स। याद रखें, यह व्याख्या के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है।

हेर्मेनेयुटिक्स एक गतिविधि है। यह एक गतिविधि है। यह एक कौशल आधार से की जाने वाली गतिविधि है जो व्याख्यात्मक सिद्धांतों और विधियों द्वारा निर्देशित होती है।

आप देखिए, मान्यता कुछ और नहीं बल्कि एक आकर्षक शब्द है, जो बाइबल का अनुसरण करने की गतिविधि के लिए एक छत्रछाया है। और वाह, यह हो सकता है, हाँ, यह बहुत काम है, लेकिन यह बहुत मज़ेदार भी हो सकता है। यह एक खोज है।

आपके पास एक खजाना है जिसे आप खोज रहे हैं, और आप चीजों को खोजना चाहते हैं। जितना अधिक आप पढ़ेंगे, उतना ही अधिक आप खोज पाएंगे। यह एक अच्छा बाइबल विद्यार्थी होने का एक अभिन्न अंग है।

1 कुरिन्थियों पर इन व्याख्यानों में शामिल होने वाला हर व्यक्ति शिक्षक द्वारा प्रस्तुत की गई बातों के बारे में निर्णय लेगा। आप जानते हैं, मैं नहीं चाहता कि आप हमेशा मुझसे सहमत हों, और मैं हमेशा चाहता हूँ कि आप उन स्रोतों को देखें जिन्हें मैं देख रहा हूँ और, उसके अलावा, यह भी देखें कि क्या कोई अन्य विकल्प हैं। सवाल यह है कि आप निर्णय कैसे लेते हैं? क्या यह केवल कुछ व्यक्तिपरक प्रक्रिया है कि आप शिक्षक के दावों या बाइबल के बारे में क्या महसूस करते हैं? अगर कोई मुझसे कहता है, मुझे लगता है कि बाइबल यह कह रही है, तो मुझे परवाह नहीं है कि आप कैसा महसूस करते हैं।

आप एक बड़े ट्रक से कुचले जा सकते थे। आपको बहुत अच्छा नहीं लगेगा, लेकिन अगर आपने बाइबल का अध्ययन किया होता तो आप मुझे बाइबल के बारे में कुछ बता सकते थे। या क्या आपके पास एक अध्ययन प्रक्रिया है, जैसे कि प्रेरितों के काम 17 में बेरिया के लोगों के पास है, जो यह जांचती है कि पवित्रशास्त्र वास्तव में क्या सिखाता है? उन्होंने पॉल को चटाई पर लिटाया, और उन्होंने कहा, हम इस पर गौर करेंगे और देखेंगे कि हम यहाँ क्या सोचते हैं।

इस पर गौर करना एक प्रक्रिया रही होगी। अपने समय और स्थान पर और अपने कौशल के साथ, उन्होंने इस व्यक्ति की जाँच करने की प्रक्रिया भी की होगी जिसे प्रेरित कहा जाता था। इसलिए, सत्यापन केवल वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा आप कहते हैं, यहाँ इस पाठ पर पाँच दृष्टिकोण हैं जो योग्य बाइबिल साहित्य प्रस्तुत करता है, और फिर आप प्रत्येक के दावों का व्यवस्थित रूप से मूल्यांकन करते हैं ताकि आप उस ओर बढ़ सकें जो आपको लगता है कि लेखक की शिक्षा का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है।

यदि आप अच्छी टिप्पणियों का उपयोग करते हैं, तो आप देखेंगे कि सत्यापन की यह प्रक्रिया वास्तव में कैसे काम करती है। एक अच्छी टिप्पणी श्रृंखला है जिससे मुझे लगभग हमेशा मदद मिलती है। यह थोड़ी उन्नत श्रृंखला है।

और जैसा कि मैंने कहा, अपने ऊपर पढ़ें; अपने नीचे न पढ़ें। लेकिन इसे वर्ड बाइबिल कमेंट्री कहा जाता है। उनके पास पूरा पुराना नियम और नया नियम दोनों हैं।

बाइबल के अध्ययन के लिए लगभग सभी प्रमुख कम्प्यूटरीकृत कार्यक्रमों में वर्ड बाइबिलिकल कमेंट्री उपलब्ध है। और मैं इसकी अत्यधिक अनुशंसा करता हूँ। यह महंगी है।

इसे कम्प्यूटरीकृत प्रारूप में खरीदना अलग-अलग संस्करणों को खरीदने की तुलना में बहुत कम खर्चीला है। लेकिन वर्ड बाइबिलिकल कमेंट्री लगभग हमेशा आपके सामने सत्यापन की यह प्रक्रिया प्रस्तुत करती है। ठीक है।

अब, यदि आप वर्ड बाइबिलिकल जैसी अच्छी टिप्पणियों का उपयोग करते हैं, तो आप उदाहरणों को सामने लाएंगे। अब, मैंने आपके लिए नोट्स में एक उदाहरण सामने रखा है। यह 1 कुरिन्थियों में नहीं है, लेकिन यह 1 तीमुथियुस 2.12 में है। और मुझे लगता है कि यह एक दिलचस्प अंश है।

मैंने एक महिला पर यह आरोप लगाया कि वह किसी पुरुष को न सिखाए या उस पर अधिकार न जताए, यह किंग जेम्स की किताब में लिखा है। इसने दशकों में बहुत से वैधीकरण अध्ययनों को जन्म दिया है। अब, यदि आप वर्ड बाइबिलिकल कमेंट्री में टिमोथी पर टिप्पणी देखें, तो यह विलियम मौस द्वारा लिखी गई है।

विलियम मौस ने ग्रीक व्याकरण पर लिखा है। उन्होंने इस क्षेत्र में जॉर्डरवन के साथ काफी कुछ किया है। लेकिन मुझे लगता है कि उन्होंने 1 तीमुथियुस पर एक बहुत बढ़िया टिप्पणी की है।

1 तीमुथियुस 2 में, मैंने आपको उस टिप्पणी से एक उद्धरण दिया है जिसे आप पढ़ सकते हैं और देख सकते हैं कि यह कैसे काम करता है। अब, इस विशेष उदाहरण के बारे में मैं एक बात कहना चाहता हूँ। जब मौस 1 तीमुथियुस 2:12 से गुज़रता है और आपको सत्यापन का उदाहरण देता है, तो वह आपको वह उदाहरण दे रहा है जिसे मैं धार्मिक सत्यापन कहूँगा।

धार्मिक मान्यता वास्तव में दूसरा कदम है। पहला कदम 1 तीमुथियुस 2 के वाक्यांशों पर विचारों को सामने लाना होता। यह क्या दर्शाता है? वह थोड़ा आगे बढ़कर उस चीज़ पर पहुँच गया जिसे मैं धार्मिक मान्यता कहता हूँ। लेकिन वे दोनों ही मान्यताएँ हैं।

आइए देखें कि यह कैसे काम करता है। पृष्ठ 15 के नीचे ध्यान दें। साहित्य बहुत बड़ा है, यानी 1 तीमुथियुस 2:12 पर। इस टिप्पणी के दायरे में, पूरी चर्चा में प्रवेश करना संभव नहीं है।

हालाँकि, अलग-अलग व्याख्याओं की समीक्षा की जाएगी क्योंकि वे सीधे पाठ के ऐतिहासिक अर्थ से संबंधित हैं। इससे ज़्यादा करने से इस एक अंश पर बहुत ज़्यादा ज़ोर पड़ेगा और पादरी पत्रों के संग्रह से सबसे अच्छी प्रस्तुतियों के लिए पूरी तरह से ध्यान हट जाएगा।

अब, वह विचारों के बारे में बात कर रहे हैं। वह जिस बारे में बात कर रहे हैं, वह 1 तीमुथियुस 2.12 को समझने के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले दृष्टिकोण हैं, जो कि बड़े मैक्रो-क्रिएटिव

निर्माणों के संदर्भ में हैं जो मंत्रालय में महिलाओं के बारे में बात कर रहे हैं। उन मैक्रो विचारों में से एक वह है जिसे वह पाठ की पूरक व्याख्या कहते हैं।

कोस्टेनबर्गर , पाइपर, गुडेम, मू, फंग, हर्ले, फो जैसे लेखकों का जिक्र करता है। ठीक है, तो ये वे लोग हैं जो पूरक दृष्टिकोण रखते हैं। देखिए, यह एक धार्मिक दृष्टिकोण है।

मुझे खेद है, लेकिन मुझे एक और दृष्टिकोण सामने लाना चाहिए था, जो पाठ के वाक्यांशों पर है। और फिर आप दोनों की तुलना कर सकते थे, लेकिन कम से कम इस समय, मेरे पास यही है। फिर, 1 तीमुथियुस 2:12 पर दूसरा प्रमुख दृष्टिकोण समतावादी व्याख्या कहलाता है।

और वह कहता है, ग्रिट्ज, पॉल, महिलाओं और शिक्षकों, और इसी तरह के अन्य लोगों को देखें। गुडेम, पेरीमैन, स्पेंसर, मू और पेन द्वारा चर्च मंत्रालय में महिलाओं का स्थान। इस पर आदान-प्रदान।

और इसलिए, वह आपको दे रहा है, और वह इसे फुटनोट्स, साहित्य में देता है। ठीक है, अब ध्यान दें कि वह आगे क्या कहता है। मैं स्पष्ट रूप से या स्पष्ट रूप से और अनदेखा जैसे विरोधी शब्दों से दूर रहने की कोशिश करूंगा।

दूसरे शब्दों में, जब आप किसी ऐसे साहित्य में शामिल होते हैं जो किसी दृष्टिकोण पर बहस कर रहा होता है, तो वे अक्सर गलती से या जानबूझकर उस तरह की भरी-भरी शब्दावली का इस्तेमाल करते हैं। और दूसरे पक्ष पर किसी एजेंडे या किसी अन्य रणनीति का आरोप लगाने से बचें जो लेबल लगाने और नाम-पुकारने में बदल सकती है। मैं किसी के निष्कर्ष को उसकी धारणा नहीं कहूंगा।

दूसरे शब्दों में, वह जो कह रहा है वह यह है। मुझे यकीन नहीं है; यह आपकी उम्र पर निर्भर करता है; मुझे यकीन है कि यह मेरे चित्रण से संबंधित नहीं होगा। लेकिन कई, कई, कई, कई साल पहले टेलीविजन पर, हर हफ्ते इसके बारे में एक सिचुएशन शो आता था; यह शुरुआती पुलिस शो में से एक था।

और मुझे इसका नाम भी ठीक से याद नहीं है। लेकिन उनके पास एक ऐसा आदमी था जिसने तथ्य और सिर्फ तथ्य ही बताए। हम सिर्फ तथ्य चाहते हैं क्योंकि उन्होंने विभिन्न अपराधों की जांच की थी। उन्हें तथ्य चाहिए, और उन्हें राय नहीं चाहिए।

अगर आप कोर्ट में जाते हैं, तो राय मायने नहीं रखती। वे तथ्यों की तलाश में रहते हैं। उन्हें प्रत्यक्ष गवाह चाहिए, न कि कोई दूसरा गवाह।

और इसलिए, यहाँ भी यही बात सच है। मौंस कहते हैं, मैं आपको सिर्फ तथ्य बताना चाहता हूँ। आपको अपना मन बनाना होगा। लेकिन हम इन विचारों को उजागर कर रहे हैं।

अगले बोल्ट प्रिंट पर ध्यान दें। यदि इन दो प्रमुख धार्मिक क्षेत्रों में से एक स्थिति वास्तव में स्पष्ट या स्पष्ट होती, तो सम्मानित विद्वानों द्वारा अपनाई गई स्थिति में कोई महत्वपूर्ण रूप से भिन्नता नहीं होती। देखिए वह यहाँ क्या कह रहा है? यह वह संभावना मुद्दा है।

इस तथ्य के बावजूद कि हमारे पास लगभग सात शब्दों वाली एक आयत है जो अत्यधिक विवादित है, यह सुसमाचारी समुदाय को मंत्रालय में महिलाओं के बारे में लगभग दो अलग-अलग विचारों में विभाजित करती है। यह बहुत बड़ी बात है, है न? और मौस यह बता रहे हैं कि यदि पाठ इतना स्पष्ट होता कि यह निर्विवाद होता, तो हमारे पास यह मुद्दा नहीं होता। तो, आप देखिए, यह टिप्पणी उन सभी बातों की पुष्टि और प्रतिबिंबित कर रही है जिनके बारे में मैं आपसे बात कर रहा हूँ।

इस मुद्दे के संदर्भ में कि बाइबल हमें कैसे सिखाती है, हम शास्त्रों से कैसे अर्थ निकालते हैं। तो, पूरकवाद और समतावाद रचनात्मक निर्माण हैं जो अपनी संरचनाओं को बनाने के लिए प्रत्यक्ष और निहित शिक्षा पर निर्भर करते हैं। और फिर वे अपनी संरचनाओं के भीतर से तर्क करते हैं।

सच कहूँ तो, यह बहुत सुंदर तस्वीर नहीं है। मैं ऐसी व्यावसायिक बैठकों में गया हूँ जहाँ यह बहुत अस्थिर हो जाता है। इसलिए, यह सब स्पष्ट नहीं है, यहाँ तक कि दिए गए पाठ के साथ भी, अन्यथा हम चर्चा ही नहीं करेंगे।

वह आगे कहते हैं, जैसा कि शोएलर टिप्पणी करते हैं, वास्तव में वस्तुनिष्ठ बाइबिल व्याख्या की अवधारणा एक मिथक है। अब, कृपया मेरी बात को समझें। कृपया इसे उस संदर्भ में समझें जो मैं आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ।

बाइबल आधिकारिक है और बाइबल का पालन किया जाना चाहिए। लेकिन बाइबल स्वयं व्याख्या नहीं करती। सिर्फ इसलिए कि आपने इसे पढ़ा है और इसका आपके लिए मतलब है, इसका कोई मतलब नहीं है।

आपको यह समझना होगा कि इसका क्या मतलब है। और यही बात यहाँ उनके कहने का मतलब है। क्या यह कहना कि एक ही दृष्टिकोण है, सिर्फ एक ही दृष्टिकोण है, और बाकी सब ग़लत है, अहंकार की स्थिति है, न कि जानकारी की स्थिति।

आप दिन के अंत में यह तय कर सकते हैं कि चार या पाँच विचारों में से, यह मेरा विचार है, और मैं इसे बहुत मानता हूँ। लेकिन इससे आपको दूसरों की बुराई करने का मौका नहीं मिलता क्योंकि वे आपसे असहमत हैं। अगर आप वास्तव में समझते हैं कि आप क्या कर रहे हैं, तो आप इसे विनम्रता के साथ रखते हैं, भले ही आप इसे गहरे विश्वास के साथ रखते हों।

सभी व्याख्याएँ सामाजिक रूप से स्थित, व्यक्तिगत रूप से तिरछी और चर्च द्वारा, यानी चर्च और धर्मशास्त्र द्वारा निर्धारित की जाती हैं। सभी बाइबिल व्याख्याकार, चाहे वे अब मंत्रालय में महिलाओं के मुद्दे पर कहीं भी खड़े हों, हमारी संस्कृति के लिंगवाद और स्त्री-द्वेष और 19वीं सदी के महिला अधिकारों और 20वीं सदी के नारीवादी आंदोलनों की घटनाओं से गहराई से प्रभावित हैं। कोई भी लेबल किसी को अपमानित करने से बच नहीं सकता।

और फिर भी चूँकि लेबल ज़रूरी हैं, इसलिए हम धार्मिक मान्यता क्षेत्र में लेबल का इस्तेमाल करते हैं। तो, यह उदाहरण 1 तीमुथियुस 2:12 में पाठ के परिणामी विचारों को मान्य करता है, और उनमें से कई हैं। मैं आपको दूसरे पाठ से एक और उदाहरण देने जा रहा हूँ जो पाठ को देखता है, न कि केवल परिणामी धार्मिक पदों को।

लेकिन इससे आपको पता चलता है कि बाइबिल संबंधी टिप्पणी शब्द क्या करता है। अब, जब मौस वापस जाता है, और यह मेरे लिए कॉपी करके आपको देने के लिए बहुत बड़ा है, जब मौस अपनी टिप्पणी में वापस जाता है, और वह खुद पाठ में जाता है, तो वह दो धार्मिक क्षेत्रों, पूरक और समतावादी को ध्यान में रखता है। जब वह विवरणों को देखता है, तो वह उन्हें वापस दृश्य में लाता है।

पूरकवादी इसे इस तरह क्यों समझते हैं? समतावादी इसे इस तरह क्यों समझते हैं? देखिए, यही वह सब है जिसे हम सत्यापन की प्रक्रिया कहते हैं। और यही मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ। अच्छी टिप्पणियाँ आपको इस प्रक्रिया को स्पष्ट करती हैं। इसलिए, जब आप इस उद्धरण को ध्यान से पढ़ेंगे, तो आप देखेंगे कि सत्यापन वही दर्शाता है जिसका मैंने उल्लेख किया है।

पाठ पर अलग-अलग विचार, उन विचारों का प्रतिनिधित्व करने वाले साहित्य को प्रस्तुत करना, तथा विचारों को दर्ज करने और उनके माध्यम से काम करने की चुनौती। इस संक्षिप्त उद्धरण में आप जो नहीं देख पा रहे हैं वह यह है कि मौस पाठ के वाक्यांशों के माध्यम से काम कर रहे हैं, जैसा कि मैंने आपको पहले ही बताया है। अब, मौस 1 तीमुथियुस 2 के संदर्भ में मुद्दों को सामने रखते हैं, तथा उन विचारों को सामने रखने से जो परिणाम सामने आते हैं, उनका उल्लेख उन्होंने पहले ही कर दिया है।

मैं इस पृष्ठ 16 पर अंतिम तीन वाक्यों पर ज़ोर देना चाहता हूँ। अपने कौशल या कौशल की कमी के बारे में चिंता न करें, बल्कि इस तरह की पढ़ाई करके अपने कौशल को विकसित करने की आजीवन यात्रा शुरू करें। कठिन मुद्दों के सरल उत्तरों से संतुष्ट न हों।

किसी शक्तिशाली व्यक्तित्व से अभिभूत न हों जो आपको किसी खास परिस्थिति में धकेलने की कोशिश कर रहा है। ईश्वर ने आपको सोचने, तर्कपूर्ण निर्णय लेने के लिए बुलाया है, और कभी-कभी यह कहना सबसे अच्छा होता है कि, मुझे कोई दृष्टिकोण देने से पहले इसका अध्ययन करने की आवश्यकता है। शायद आप इसके लिए तैयार नहीं हैं, और आपको मुद्दों पर गौर करने की आवश्यकता है।

अगर आप ईमानदारी से कहें कि आप एक प्रक्रिया में हैं, तो आप खुद को बहुत से दुखों से बचा सकते हैं। किसी प्रक्रिया में होने पर कभी शर्मिंदा न हों। यह कहने में कभी शर्मिंदा न हों कि, मुझे नहीं पता।

इससे पहले कि मैं यह निर्णय ले सकूँ कि यह वास्तव में क्या कह रहा है, मुझे इसे ध्यान से देखने की आवश्यकता है। कुछ लोग आपको इस पर धकेल देंगे, लेकिन उस तरह के दबाव में न आएं।

और मैं आपको बताना चाहता हूँ कि यदि आप मंत्रालय में हैं या मंत्रालय में जाने वाले हैं, तो लोग लगातार आपको अपने पक्ष में करने के लिए हेरफेर करेंगे।

क्या आपको नहीं लगता, पादरी, यह इस अंश की सबसे अच्छी समझ है? और आप लंच के लिए बाहर ले जाए जाने के संदर्भ में हैं। हो सकता है कि आपने अभी-अभी 18 कुदालें खेती हों, या हो सकता है कि आपने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर कुछ और किया हो, और अचानक, यहाँ हेरफेर आ जाता है। क्या आपको नहीं लगता कि यह सबसे अच्छी समझ है? खैर, शायद आपको नहीं लगता।

अब, आप क्या करने जा रहे हैं? क्या आपकी दोस्ती खतरे में है? जानें कि क्या आप एक अच्छे, ईमानदार व्यक्ति हैं और जो सिखाने में रुचि रखते हैं, न कि केवल एक दृष्टिकोण रखते हैं। आप उस व्यक्ति की मदद कर सकते हैं जो आपको हेरफेर करने की कोशिश कर रहा है, यह कहकर कि, आप जानते हैं, हमें एक साथ मिलना चाहिए और मेरे कार्यालय में मौजूद संसाधनों को देखना चाहिए कि इसका क्या मतलब है और इसका अध्ययन करना चाहिए। हम अपनी बाइबल निकाल सकते हैं और कुछ कॉन्कोर्डेंस वगैरह ले सकते हैं।

इसे एक प्रक्रिया बनने दें। इस प्रक्रिया को कभी भी कमतर न आंके। इसलिए, जैसे-जैसे हम 1 कुरिन्थियों की पुस्तक में आगे बढ़ते हैं, सत्यापन का यह आदर्श वाक्य, विचारों को देखना, उन्हें एक साथ लाना और निर्णय लेना, बार-बार सामने आने वाला है।

अब मैं 1 कुरिन्थियों में सब कुछ के साथ ऐसा नहीं कर सकता। कभी-कभी मैं आपको एक दृष्टिकोण दूंगा। मैं आमतौर पर हमेशा इस दृष्टिकोण से इसे सैंडविच करूंगा कि अन्य विकल्प भी हैं।

लेकिन सच तो यह है कि यह बहुत बड़ा है। यह बहुत बड़ा है। लेकिन मैं आपको बताता रहूँगा कि क्या हो रहा है और हम कैसे आगे बढ़ रहे हैं।

अब मैं वैधता के बारे में एक और उदाहरण पर आता हूँ, और यह माउंट के धार्मिक उदाहरण से थोड़ा बेहतर काम करता है। यह एक उदाहरण है कि विशेष आयतों का क्या मतलब है। यह उदाहरण 1 कुरिन्थियों 14 आयत 33 से लिया गया है।

अगर मैं इसे प्राप्त कर सकता हूँ। तो मुझे अपना स्थान चिन्हित कर लेना चाहिए था। 1 कुरिन्थियों 14:33.

बाइबल के पतले पन्ने। इसी तरह वे बाइबल जैसी बड़ी चीज़ को एक छोटी किताब में ढाल सकते हैं। 1 कुरिन्थियों 14:33.

ध्यान दें कि मैंने श्लोक 33बी लिखा है। अब मैं न्यू इंटरनेशनल वर्जन, एनआईवी देख रहा हूँ। मैं 2011 संस्करण भी देख रहा हूँ।

यहाँ फिर से पैराग्राफिंग की बात आती है। उदाहरण के लिए, पद 33 के बीच में 33b के साथ पैराग्राफ को तोड़ने के बजाय, याद रखें कि मूल पांडुलिपियों में कोई पद नहीं था। पद 33 पर ध्यान दें।

क्योंकि परमेश्वर अव्यवस्था का परमेश्वर नहीं है, बल्कि शांति का परमेश्वर है, जैसा कि प्रभु के लोगों की सभी मण्डलियों में है। पहले आधे भाग के बाद डैश पर ध्यान दें। परमेश्वर अव्यवस्था का परमेश्वर नहीं है, बल्कि शांति का परमेश्वर है।

डैश। जैसा कि प्रभु के लोगों की सभी मण्डलियों में होता है। अब सवाल यह है, और पृष्ठ के निचले भाग में छोटा सा f भी शायद आपको यह बता रहा है, जहाँ भी वह f आता है, कि इसे देखने के दो तरीके हैं।

33a पिछले पैराग्राफ को बंद कर सकता है, और 33b अगले पैराग्राफ को खोल सकता है। या 33 बंद करता है, और 34 खोलता है। तो, सवाल यह है कि सभी मण्डलियाँ किस बात का उल्लेख करती हैं? पहले क्या हुआ या बाद में क्या हुआ? देखिए, यह एक बहुत बड़ा, बहुत बड़ा, बहुत बड़ा मुद्दा है।

मुझे यहाँ सिर्फ़ इतना बताना चाहिए कि आपकी बाइबल में विराम चिह्न बहुत ज़्यादा हैं। मेरे ग्रीक न्यू टेस्टामेंट में, विराम चिह्नों पर फुटनोट्स की एक पूरी श्रृंखला है जो सभी संस्करणों को दिखाती है और बताती है कि वे किस तरह से छंदों पर विराम चिह्न लगाते हैं जहाँ आप अल्पविराम या अवधि या पैराग्राफ़ इंडेंटेशन लगाते हैं जो किसी अंश के पूरे अर्थ को गलत कर सकता है। यहाँ, अगर हम प्रभु के लोगों की सभी मण्डलियों में पद 34 के साथ ऐसा करते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे पॉल एक अनिवार्यता की घोषणा कर रहा है।

अगर हम श्लोक 34 की शुरुआत महिलाओं को चुप रहने से करते हैं, तो हमें एक नया विचार मिलता है, और यह जरूरी नहीं कि 33बी से जुड़ा हो। इसलिए, मैंने आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करने के लिए अपने दृष्टांत के शीर्ष पर 33बी को शामिल किया है। तो, लेकिन इसका क्या मतलब है? महिलाओं को चर्च में चुप रहना चाहिए।

उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है, उन्हें कानून के अनुसार आज्ञाकारी होना चाहिए। अगर वे पूछताछ करना चाहती हैं, तो उन्हें घर पर अपने पति से पूछना चाहिए। अब, हो सकता है कि आपने अपने जीवनसाथी के साथ अपने फायदे के लिए उस मार्ग का उपयोग किया हो।

यह आपके लिए नुकसानदेह हो सकता है क्योंकि आखिरी चीज जो आप करना चाहते हैं वह है अपनी पत्नी को आलोचनात्मक विचारक होने से रोकना और उसे अपनी इच्छा के अनुसार ढालना। इसलिए, इस अनुच्छेद का उपयोग करने में बहुत सावधान रहें। लेकिन यह अनुच्छेद अत्यधिक विवादित है।

क्यों? खैर, इसका कारण यह है। 1 कुरिन्थियों 11 में, और हम इसे बाद में देखेंगे, पॉल सार्वजनिक पूजा और सार्वजनिक पूजा में महिलाओं की भागीदारी को मान्य करता है। वह उन्हें रोबोट नहीं, बल्कि भागीदार होने के लिए मान्य करता है।

महिलाओं के बारे में सभी अलग-अलग विचारों के साथ यह लगभग निर्विवाद है। अब, अध्याय 14 में, हमें इस तरह का कथन मिलता है। महिलाओं को चुप रहना चाहिए।

तो, यह तुरंत तीन या चार अध्यायों के भीतर सवाल उठाता है: क्या हो रहा है, पॉल? आप हमें यहाँ यह बताते हैं, और अब आप हमें यहाँ यह बता रहे हैं। यह लाल झंडे उठाता है। ठीक है।

तो यहाँ मैंने आपको सत्यापन करने का एक मॉडल दिया है। इस के ठीक ऊपर, सचित्र अभ्यास के ठीक नीचे, ब्रैकेट में मेरी डार्क प्रिंट टिप्पणियों पर ध्यान दें। सत्यापन में पहला कार्य जांच की जा रही समस्या या मुद्दे को परिभाषित करना है।

समस्या क्या है, इसे समझने और बताने के लिए पर्याप्त पूर्व-शोध की आवश्यकता होगी। दूसरे शब्दों में, आपको यह जानने के लिए भी शोध करना होगा कि ये मुद्दे कहाँ हैं। एक बार जब आप उन्हें पा लेते हैं, तो आप आते हैं और उन्हें अधिक गंभीरता से लेते हैं।

स्पष्ट समस्या। यह यहाँ है। प्रथम कुरिन्थियों 11 चर्च की सार्वजनिक सेवाओं में महिलाओं की भागीदारी को वैध ठहराता है।

ऐसा लगता है कि 1 कुरिन्थियों 14 में इसके ठीक विपरीत कहा गया है। महिलाओं को बिना किसी अपवाद के चुप रहना चाहिए। घर पर अपने पतियों से सलाह लें।

आप इसे कैसे सुलझाते हैं? ठीक है। दूसरा काम सत्यापन है। अब आपको समस्या बता दी गई है।

आपको पता है कि आप किससे निपट रहे हैं। दूसरा काम विभिन्न विचारों को लॉग करना है। अब शुरू होता है कागजी कार्रवाई का काम।

आप जाइए, और आपको अपनी सबसे अच्छी टिप्पणियाँ मिलेंगी। आप देखेंगे कि वे क्या कहते हैं। आप देखेंगे कि वे क्या कहते हैं और दूसरे क्या कहते हैं।

आप दूसरों को खोजने की कोशिश करें ताकि आपके पास यह बढ़ती हुई सूची हो। देखिए यह क्या है। अगर आप स्कूल में हैं तो आप इस तरह से पेपर लिखते हैं।

आपके पास विचारों के प्रतिनिधियों की यह बढ़ती हुई सूची है। अब मैंने यह कर लिया है, और मैंने इन्हें अगले भाग में दर्ज कर दिया है। यहाँ विचार हैं।

पहला दृष्टिकोण। आप इसे सीधे तौर पर ले सकते हैं। यानी, महिलाएं चुप हो जाती हैं।

और 1 कुरिन्थियों 11 को नज़रअंदाज़ कर दें। बहुत से लोकप्रिय साहित्य ऐसा करते हैं। यह इन अंशों को अलग-थलग कर देता है जैसे कि उनका कोई संबंध ही न हो।

अब, दाएँ कॉलम में, जिसे मैंने नहीं भरा है। आप क्या करेंगे? अगर आप किसी ऐसे व्यक्ति को सामने लाते हैं जो ऐसा कहता है। मैंने कभी कोई असली किताब सामने नहीं रखी।

यह एक वास्तविक टिप्पणी है जो ऐसा कहती है। लेकिन कुछ लोकप्रिय साहित्य भी हैं जो ऐसा करेंगे। और कुछ उपदेश भी हैं जो ऐसा करते हैं।

आप तर्क प्रस्तुत करेंगे। वे ऐसा क्यों कहेंगे? इस अंश के बारे में। ठीक है।

दूसरा दृश्य। अध्याय 14. भविष्यवाणी का संदर्भ।

यह एक भविष्यवाणी का संदर्भ है। और यह आधिकारिक शिक्षा के बारे में बात नहीं कर रहा है। बल्कि भविष्यवाणी वाली शिक्षा के बारे में बात कर रहा है।

दूसरे शब्दों में, दो तरह की शिक्षाएँ दी जा रही हैं। महिलाओं को भविष्यवाणी नहीं करनी है। लेकिन यह उन्हें आधिकारिक शिक्षा के मामले में बंद नहीं कर रहा है।

खैर, हर्ले और कार्सन हैं। हमारे दो विद्वानों ने इस बारे में कुछ मुद्दे रखे हैं। और अध्याय 14 का संदर्भ।

तीसरा दृष्टिकोण। अंतर्वेशन। कोन्ज़ेलमैन, गॉर्डन फ़्री एक बहुत ही रूढ़िवादी लेखक हैं।

और फिलिप पेन, जिन्होंने पांडुलिपियों पर काम किया है। उनका दावा है कि यह अंश मूल रूप से 1 कुरिन्थियों 14 की यूनानी पांडुलिपियों में नहीं था। लेकिन यह हाशिये पर था और बाद में लाया गया।

अब आप कहते हैं कि यह बहुत अजीब है। खैर, यह इतना अजीब नहीं है क्योंकि फिलिप पेन ने वास्तव में इन पांडुलिपियों को देखा है और यह प्रदर्शित करने के लिए लिखा है कि यह एक संभावना है। गॉर्डन फ़्री 1 कुरिन्थियों के प्रमुख पाठ्य आलोचकों में से एक हैं।

1 कुरिन्थियों पर उनकी टिप्पणी में पाठ्य आलोचना के बारे में किसी भी अन्य टिप्पणी से अधिक जानकारी है। इसलिए, ये कोई रातों-रात बनने वाले लोग नहीं हैं। न ही वे उदार विद्वान हैं।

वे दोनों ही रूढ़िवादी विद्वान हैं। लेकिन हम उदारवादी और रूढ़िवादी के बारे में चिंतित नहीं हैं। हम तथ्यों के बारे में चिंतित हैं।

क्या प्रस्तुत किया गया है? और यह एक दृष्टिकोण है। अध्याय 14 एक भविष्यवाणी का संदर्भ है।

और आधिकारिक शिक्षण से निपटना नहीं। अब, एक और दृष्टिकोण है। अंतर्वेशन।

वह आ गया है। यह मौलिक नहीं था। यहाँ चौथा दृश्य है।

अब यह एक उदार विद्वान द्वारा है। फिओरेन्ज़ा। नारीवादी पॉलीन पितृसत्तात्मकता।

अब यह दृष्टिकोण मेरे और दूसरों के लिए मानचित्र से बहुत दूर होने वाला है। मुझे यकीन है। लेकिन फियोरेन्ज़ा के लिए नहीं। वह पॉल को सिर्फ पुरुष प्रधान मानती है। और वह एक रोमन कैथोलिक नारीवादी है। लेकिन वह एक दृष्टिकोण है। वह दृष्टिकोण प्रकाशित है और उसे लॉग इन किया जाना चाहिए।

ठीक है। पाँचवाँ। यह कथन पारिवारिक संहिता से संबंधित है, सार्वजनिक सभा से नहीं। यह पारिवारिक संहिता का मुद्दा है। यह सार्वजनिक सभा का मुद्दा नहीं है।

इसलिए, अध्याय 11 के लिए यह कोई समस्या नहीं होगी। यह दृष्टिकोण ई. अर्ल एलिस से कम किसी और ने प्रस्तुत नहीं किया है। ई. अर्ल एलिस एक बेहतरीन प्रमुख रूढ़िवादी विद्वान थे, जो अब हमसे दूर चले गए हैं, अगर मुझे सही से याद है।

मैं कुछ समय से उनके इतिहास से दूर हूँ। लेकिन वे एक बहुत अच्छे टिप्पणीकार हैं। उन्होंने इस पर लेख लिखे हैं।

और यह ग्रंथसूची में है। छठा दृश्य। कोरिंथियन नारे का जवाब।

मैं इस बारे में हमारे परिचय में और बात करूँगा। लेकिन 1 कुरिन्थियों की पुस्तक को आगे बढ़ाने वाली एक बात यह है कि पौलुस ने कुरिन्थ के भीतर उपसमूहों को उद्धृत किया और फिर उनका जवाब दिया। और कुछ लोग कहते हैं कि महिलाओं के चुप रहने के बारे में यह उद्धरण एक उपसमूह है जो महिलाओं को दबा रहा है जो अध्याय 11 के अनुरूप नहीं है, और पौलुस उन पर हमला करता है।

यह एक प्रमुख दृष्टिकोण है। यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जो मुझे बहुत ही सम्मोहक लगता है - कोरिंथियन नारों के प्रति एक प्रतिक्रिया।

अब, आपको उससे जुड़ने के लिए कुरिन्थियों के बारे में जानना होगा। फिर आखिरी है पॉलीन का व्यंग्यात्मक व्यंग्य, जो शायद छठे नंबर पर थोड़ा बदलाव हो सकता है। लेकिन इसका अपना लेखक है, इसका अपना लेख है, और आपको इसे देखना होगा।

तो, सिर्फ विचारों को सामने लाकर, जो नीचे दी गई ग्रंथ सूची में दर्शाए गए हैं, मैंने सात विचारों को सूचीबद्ध किया है। निश्चित रूप से ये सभी विचार नहीं हैं। अब, मेरा काम क्या है? खैर, मेरा काम है कि मैं जो साहित्य सामने लाया हूँ, उसके ज़रिए पक्ष और विपक्ष को सूचीबद्ध करूँ।

और फिर मूल्यांकन करने के लिए, आप कहेंगे, मुझे खेद है, यह बहुत ज़्यादा काम है। हाँ, यह बहुत ज़्यादा काम है। बाइबल की व्याख्या, मेरे दोस्तों, एक दर्शक खेल नहीं है।

बाइबल की व्याख्या करने के लिए गहराई में जाना पड़ता है, खुदाई करनी पड़ती है और इस सामग्री को सतह पर लाना पड़ता है और उससे निपटना पड़ता है। आप इसे रातों-रात नहीं कर सकते। इसके लिए आजीवन सीखने की प्रक्रिया होनी चाहिए।

और कभी-कभी, जब आप पादरी या किसी तरह के ईसाई नेता के रूप में समस्याओं के बीच में होते हैं, तो आपको समय निकालकर इन मुद्दों को सामने लाने के लिए सामुदायिक प्रयास करना चाहिए ताकि आप तथ्यों को सामने रख सकें, विचारों को सामने रख सकें, उन पर काम कर सकें और उन पर चर्चा कर सकें और इस बारे में तर्कसंगत निर्णय ले सकें कि आपको क्या लगता है कि सबसे अच्छा उत्तर क्या है। इसलिए, बहुत ही संक्षिप्त तरीके से, मैंने आपको एक रूपरेखा दी है जो 1 कुरिन्थियों अध्याय 14 में इस अंश की पुष्टि की प्रक्रिया शुरू करेगी। अब, हम बाद में अन्य तरीकों से उस पर वापस आएं।

लेकिन फिलहाल, यह सत्यापन का मुद्दा है। यह कोई गूढ़, गुप्त बात नहीं है। यह सिर्फ़ स्रोतों को सामने लाने, स्रोतों को पढ़ने, वे जो कहते हैं उसे दर्ज करने, उनके पास क्या है, यह देखने का काम है, न कि वे जो रिपोर्ट कर रहे हैं, कोई और क्या कह रहा है, और अपनी सूची बनाना और फिर साहित्य का पीछा करना ताकि आप पक्ष और विपक्ष के कारण जान सकें और देख सकें कि वे किस तरह एक दूसरे से बहस करते हैं।

कभी-कभी, वे इन विभिन्न टिप्पणियों में एक-दूसरे को उद्धृत भी करते हैं, और आप देख सकते हैं कि यह प्रक्रिया चल रही है। यह बाइबिल की व्याख्या है। यह कोई दर्शक खेल नहीं है।

आपको वहां कूदना होगा और अपने हाथों को जानकारी से भरना होगा ताकि आप इसे संसाधित कर सकें। अब, मैं विशेष रूप से हम लोगों के बारे में बात कर रहा हूँ, जो दावा करते हैं कि हमें ईसाई नेतृत्व के लिए बुलाया गया है। हमें यह काम करना है ताकि हम इसे दूसरों के साथ साझा कर सकें।

जैसा कि पॉल कहते हैं, हमें कामगार बनना चाहिए। वह कड़ी मेहनत के रूपक का उपयोग करते हुए कहते हैं कि अगर हम वह काम नहीं करते हैं, तो हमें शर्मिंदा होना चाहिए। पॉल कहते हैं कि ऐसा कामगार बनो जो शर्मिंदा न हो।

बाइबल क्या सिखाती है, इस बारे में ईसाई समुदाय के निर्णय लेने की प्रक्रिया को सामने लाना। यह बहुत गंभीर है। और हाँ, इसमें समय लगता है।

लेकिन हमारे पास अपना जीवन है। हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते हैं। लेकिन मैं यह कहना चाहूँगा कि मैं दिन के अंत में परमेश्वर के सामने खड़ा होकर यह कहना चाहूँगा कि हे प्रभु, मैंने प्रयास किया, बजाय इसके कि मैं परमेश्वर के सामने शर्मिंदा होकर खड़ा रहूँ क्योंकि मैंने धारणाएँ बना ली थीं, बजाय इसके कि मैं उस तरह का काम करूँ जो परमेश्वर के वचन से निपटने के मामले में परमेश्वर की महिमा करता हो।

मुझे उम्मीद है कि आप भी उस ट्रेन में सवार होंगे। मुझे लगता है कि मैंने आपको वह जानकारी दे दी है जो आपको यह समझने में मदद कर सकती है कि वह ट्रेन किस बारे में है। कृपया उन तीन बड़े सिद्धांतों की समीक्षा करें जिनके बारे में हमने बात की है।

हम 1 कुरिन्थियों के परिचय के इस भाग से गुजर चुके हैं। अगला कदम 1 कुरिन्थियों की पुस्तक को ही लेना होगा। मेरे पास 1 कुरिन्थियों के पाठ के लिए कुरिन्थ की सेटिंग और उस प्रकृति की चीजों का एक विस्तृत परिचय है जिस पर हम अपने अगले व्याख्यान में काम करना शुरू करेंगे।

आपको जाकर नोटपैड नंबर पांच लेना चाहिए। नोटपैड नंबर पांच 1 कुरिन्थियों का परिचय है। यह काफी लंबा है।

मैं आपको बाद में इसकी लंबाई समझाऊंगा। ऐसी बहुत सी बातें हैं जो आपको तुरंत स्पष्ट नहीं होंगी, जिनके बारे में मुझे आपको बताना होगा। कोरिंथ शहर के बारे में प्राचीन लेखकों के बहुत सारे उद्धरण हैं।

मैंने उस परिचय में ऐसी चीजें रखी हैं जिन्हें आप खुद देख सकते हैं, लेकिन मैं आपको यह नहीं समझाऊंगा कि आप कहां देख सकते हैं कि एक प्राचीन लेखक ने कोरिंथ शहर के बारे में क्या कहा था। आप कोरिंथ की तस्वीर और उसके कुछ खंडहर देख सकते हैं। इस पूरी चीज में एक पुरातात्विक टुकड़ा है और उस शहर की भूगोल और सेटिंग का एक ऐतिहासिक पुनर्निर्माण है।

यह कुछ ऐसा होगा जिस पर आप काम करेंगे, जैसा कि आप करना चाहते हैं, और हम इसे आपके लिए BiblicaleLearning साइट पर उपलब्ध कराएंगे ताकि आप इसे आगे बढ़ा सकें। मेरा व्याख्यान कुछ अन्य चीजों पर केंद्रित होगा। पैकेट का आकार जरूरी नहीं है कि यह संकेत दे कि हमें परिचय को पूरा करने में महीनों लगेंगे।

आप उस पैकेट को बाहर निकालना चाहेंगे। आप उस पर काम करना चाहेंगे। यही मैं आपको सुझाव देना चाहूँगा, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे।

आप अगली प्रस्तुति का पैकेट निकालते हैं। आप यह देखने के लिए उसका पूर्वावलोकन करते हैं कि आगे क्या होने वाला है। आप बाइबल का पाठ पढ़ते हैं।

आप एक टिप्पणी पढ़ें। फिर, आप मेरी प्रस्तुति सुनें, और जब आप प्रस्तुति पर आएँगे तो आपको कुछ संदर्भ मिलेगा ताकि आपको ऐसा न लगे कि आप खो गए हैं। फिर आप मेरी दी गई प्रस्तुति को छोड़ दें और उस सामग्री पर वापस जाएँ, और यह बहुत अधिक समझ में आएगा।

यह एक प्रक्रिया है। आना और जाना। व्याख्यान सुनना एक बार नहीं हो सकता।

आपको लग सकता है कि आपको एक से ज़्यादा बार सुनने की ज़रूरत है। यह बिलकुल ठीक है। मैं चाहता हूँ कि आप जानें कि BiblicaleLearning साइट ने आपके लिए क्या किया है।

मेरी समझ से इसने बाइबिल संबंधी विद्वत्ता से दुनिया की सबसे अच्छी जानकारी को एक साथ लाया है और आपको इसे मुफ्त में दिया है। वाह! यह आश्चर्यजनक है। कुछ लोग इस माध्यम से आपके पास मौजूद प्रोफेसरों तक पहुँच पाने के लिए हज़ारों-हज़ारों डॉलर का भुगतान करते हैं।

इसका सबसे अच्छा उपयोग करें। इसे एक समूह के रूप में भी करें। आप में से दो या तीन लोग एक ही प्रस्तुति सुन सकते हैं।

आप इसे बंद और चालू कर सकते हैं। आप जब चाहें हमें चुप करा सकते हैं। चीजों के बारे में बात करें और फिर वापस आ जाएँ।

अगर आप चाहें तो मुझे ईमेल के ज़रिए भी सवाल पूछ सकते हैं। तो, यात्रा पर निकल जाइए। ट्रेन पर चढ़िए।

आइये हम सब मिलकर इसका आनंद लें। धन्यवाद, और आपका दिन शुभ हो।

यह डॉ. गैरी मीडर्स द्वारा 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह व्याख्यान 5 है, बाइबिल अध्ययन में सत्यापन की प्रक्रिया का अभ्यास करना।